स्वामी सुचरित मुनि

स्वामी सुचरित मुनिजी का जन्म पंचमहाल ज़िले के मलाव गाँव के ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनका सांसारीक नाम यशवंतभाई व्यास था। यशवंतजी अभ्यास में बहुत तेजस्वी छात्र थे। उन्होंने अभ्यास पूर्ण करने के पश्चात् मेडिकल क्षेत्र में भारत में अलग अलग स्थानों पर सेवा दी।

यशवंतभाईने भारत में अनेक तीर्थ स्थानों की यात्रा की और संतों महात्माओ के सेवा, सत्संग सांनिध्य का लाभ प्राप्त करते रहे। उनकी जन्मभूमि मलाम में योग साधना रत शिवावतार भगवान लकुलीशजी के शिष्य स्वामी कृपाल्वानंदजी से 1967 में संन्यस्त दिक्षा एवं सुचरित मुनि नाम प्राप्त हुआ।

सुचरित मुनि ज्यादातर उत्तर भारत के हरियाणा में और अलग अलग स्थानों पर एकांतवास में साधनारत रहे। साथ में ही आप भारत के अनेक स्थानों पर भ्रमण कर अनेकों मुमुक्षोओ को प्रभुप्रेम, धर्म, ज्ञान, भक्ति के लिए मार्गॅदर्शित करते रहे है। स्वामी सुचरित मुनि का निरासक्त अपरीग्रह, विरक्त और परमार्थी जीवन विवेकवान को प्रेरणा प्रदान करता है एवं उनका गहन उपदेश संसार में तप्त मानवों को शांति और उन्नति का पथ प्रदान करता है।